◻ तृतीय अध्याय ◻

" भगवतीचरण वर्मा कृत "भूले - बिसरे चित्र"

उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज।"

भगवतीचरण वर्माजी कृत "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में

प्रतिबिंबित समाज का चित्रण :

समाज की परिधि बड़ी विस्तृत एवं व्यापक होती हैं। मानव जीवन के विभिन्न पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी समाज के अन्तर्गत ही आते हैं। इनकी पूर्ती समाज में रहकर ही की जा सकती है। उपन्यासकार के लिए समाज वह आधारपीठिका है, जहाँ वह स्वयं जन्म लेकर समाज से कुछ भी वह ग्रहण कर लेता है उसमें कलात्मक रंग भरकर सामाजिक मनोरंजन करते हुए जीवन की विशिष्ट प्रतिच्छवि चित्रित करता हैं।

श्री. भगवतीचरण वर्माजी के बृहत एवं सर्वोत्कृष्ट उपन्यास "भूले-बिसरे चित्र" का प्रकाशन सन १९५९ में हुआ था। इस उपन्यास में लेखक ने संवत १८८५ ई. से लेकर १९३० ई. तक के भारतीय जीवन का चित्रण अंकित किया हैं। इस उपन्यास की काल-सीमा और क्षेत्र विस्तार बहुत अधिक है। हमारे देश के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के इतिहास में इस कालखंड का विशेष महत्व है क्योंकि इस समय के बीच हमारे यहाँ राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए किया गया आन्दोलन आरम्भ हुआ, पनपा और विस्तृत क्षेत्रीय रूप में परिवर्तित हुआ। भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा और जीवन की मान्यताओं ने भी मूलभूत परिवर्तन हुआ। इतने बड़े क्षेत्र को पृष्ठभूमि बनाकर यह उपन्यास भारतीय सामंती जीवन के प्रतिनिधि एक परिवार के चार वंशों से सम्बन्ध रखता है। दूसरे शब्दों में, इसमें सामाजिक वर्गों की मान्यताओं के पतन का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया हैं।

वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास को पाँच खंडों में विभाजित किया है। इस उपन्यास में सं १८८५ ई. से संवत १९३० ई. तक के स्वातंत्र्यपूर्व काल का सही चित्रण उपन्यासकारने विविध स्तरों के पात्रों के माध्यम से किया हैं।

प्रथम खंड -

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खण्ड में मुन्शी शिवलाल तथा उनके परिवार का चित्रण किया है। इस उपन्यास में चार पीढ़ियों का विस्तृत चित्रण किया गया है, जिसके प्रमुख उस परिवार के कर्ता मुन्शी शिवलाल हैं। प्रथम खण्ड में अनेक पात्र आते हैं, जो अनेक वर्ग के प्रतिनिधि हैं। स्वातंत्र्यपूर्व काल होने के कारण उपन्यास के प्रथम खंड में अनेक वर्गों का समाज प्रतिबिंबित हुआ है। भारतीय समाज व्यवस्था का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण अंग संयुक्त परिवार है। इससे परिवार में सहयोग, सद्भाव, स्नेह एवं समानता की भावना बनी रहती है। भगवतीचरण वर्मा ने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खंड में संयुक्त परिवार व्यवस्था का चित्र चित्रित किया है। उपन्यास का विभाजन बदलते हुए जीवन-मूल्य और कथानक के नए मोडों के आधारपर हुआ है। प्रथम खंड की कथा में हम देखते हैं कि, मुंशी शिवलाल उस मध्यवर्ग के प्रतिनिधि हैं, जो संयुक्त कुटुंब को मध्यवर्गीय जीवन का अविभाज्य अंग स्वीकार करते हैं। मुंशी शिवलाल स्वयं तो विधुर हैं, परंतु उनका संयुक्त परिवार है और उस परिवार में उनके छोटे भाई राधेलाल का शासन है। यद्यपि ज्वालाप्रसाद का विवाह हो चुका है तथापि संयुक्त कुटुंब में नई बहू के स्थान पर सास राधेलाल की पत्नी का ही अस्तित्व है। संयुक्त परिवार की यह एक विशिष्ठता होती है कि उसमें से यदि एक व्यक्ति भी आर्थिक दृष्टि से अन्य लोगों से ऊँचा उठ जाता है तो सारा परिवार उसी के आश्रय में जीवनयापन करने लगता है। यही स्थिति मुंशी शिवलाल के परिवार में है। सारा परिवार ज्वालाप्रसाद के आश्रय में जीवन यापन कर रहा है।

वर्माजीने विशेष रूप से वर्ण-व्यवस्था तथा जाति-व्यवस्था के विघटन का भी विस्तार से चित्रण किया है। इस उपन्यास के प्रथम खंड की प्रमुख नारीपात्र छिनकी, जो दलित-वर्ग की हीन-भावना से ग्रस्त है। जो मुन्शी शिवलाल के जीवन का अविभाज्य अंग है और साथ ही साथ उसकी पर्यंकशायिनी भी है और वहीं दूसरे स्थान पर खान-पान की दृष्टिसे अस्पृश्य। वह धर्मभीरु होने

के कारण उसमें परम्परागत संस्कार बध्दमूल है कि निम्न वर्ण के व्यक्तियों के हाथ से बनाया भोजन खाने से उच्च वर्ण के लोगों का धर्म नष्ट हो जाता है। इसीकारण वह मुंशी शिवलाल से कहती है,

"राम-राम हम कच्ची रसोइयाँ माँ कैसे जाई ? कलपतास कर रहे हो तो .. तौन धरम-करम का तो ख्याल राखो। चौका माँ हमरे जाय से चौका छूत हुई जइहे न।" [१]

छिनकी के इस कथन से लेखक ने एक ओर समाज के निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर हिन्दु-वर्ण व्यवस्था की आडम्बरप्रियता पर करारा व्यंग्य किया है। निम्न वर्ग की स्त्रियों को प्रेम और वासना की दृष्टी से अपनाती तो अवश्य हैं, परंतु उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा देने के लिए तत्पर नहीं दीख पड़ती।

उपन्यास के प्रथम खण्ड में हम देखते हैं कि, उस युग में ऊँच-नीच की भेद-भावना भी इतनी प्रबल थी कि चमार, ब्राम्हण के कुएँ से पानी तक नहीं पी सकता था। इस जड़ होती हुई समाज-व्यवस्था में भी हमें प्रगतिशील तत्व दिखाई पड़ते हैं, जिनका प्रतिनिधित्व हमीरपुर के मुंशी रामसहाय करते हैं। वे अपनी हवेली के कुएँ का आधा हिस्सा चमारों के उपयोग के लिए दे देते हैं। परंतु मध्यवर्ग में ऐसी बातों का सदैव विरोध होता रहा है, यही कारण है कि, मुंशी रामसहाय को भी इस विरोध का सामना करना पड़ता है। यह उस युग की प्रगतिवादी चेतना का दयोतक है।

इस खंड में अवैध प्रेम की समस्या का रूप भी व्यापक धरातल पर आत्मसात करती हुई एक ही परिवार की तीन पीढ़ियों का सटीक चित्र प्रस्तुत करती हैं। छिनकी कहारीन सिर्फ शिवलाल की शारीरिक तृप्ति का माध्यम ही नहीं है अपितु पारिवारिक मान्यता भी प्राप्त किये हैं। इसीलिए मरतें समय शिवलाल अपने पुत्र ज्वालाप्रसाद से कहते हैं, -

"यह छिनकी तेरी दूसरी माँ है। मैंने इसे बड़ा कष्ट दिया है उसकी कोई बात नहीं सुनी। तो इसे अब तेरी दया पर छोड़ रहा हूँ, तेरी सबसे

अधिक सगी यही है।" २

प्रेम का दूसरा रूप ज्वालाप्रसाद और जैदेई के माध्यम से प्रकट हुआ है। इस उपन्यास में जैदेई का वैधव्य एकमात्र ज्वालाप्रसाद की प्रेमवासना की पूर्ति के लिए ही नहीं चित्रित किया गया है, अपितु युगीन परिवेश में ठाकुर-बनिये के प्रबल संघर्ष का हत्या-आत्महत्या में परिणत हो जाने के कारण जैदेई को विधवा होना पड़ता है।

इस प्रकार "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खण्ड में संवत १८८५ मुक्तिक सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओंका चित्रण वर्माजीने किया है। इस खण्ड में विविध प्रकार का समाज प्रतिबिंबित हो चुका है। जैसे संयुक्त परिवार व्यवस्था, जाती-पाति की व्यवस्था, छुआछुत की समस्या, जमींदारी प्रथा।

दूसरा खण्ड -

भगवतीचरण वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र"उपन्यास के प्रथम खंड में संयुक्त परिवार व्यवस्था का चित्र चित्रित किया है और उसके विघटन की कहानी द्वितीय खंड में कही है। लेखक ने प्रत्येक पीढ़ी का संघर्ष अपनी गत पीढ़ी के परिप्रेक्ष्य में बढ़ता हुआ दिखलाया है। संयुक्त-परिवार व्यवस्थाकी यह एक विशिष्ठता होती है कि, उसमें से यदि एक व्यक्ति भी आर्थिक दृष्टि से अन्य लोगों से ऊँचा उठ जाता है तो सारा परिवार उसी के आश्रय में जीवनयापन करने लगता है। यही स्थिति मुंशी शिवलाल के परिवार की है। ज्वालाप्रसाद के नायब तहशीलदार होते ही सबकी आँखें उसकी ओर लग जाती है और यहीं पर युगानुकूल परिवर्तन से संयुक्त-कौटुंबिक व्यवस्था टूट जाती है, जिसके कारण पारिवारिक स्तर पर शक्ति और अधिकार बदल गये। परिवार का सबसे बड़ा व्यक्ति अब उसका स्वामी नहीं रह गया, अपितु स्वामित्व उसके हाथ में आ गया, जिसके पैसों के आश्रय से परिवार पलने लगा। घर की

मालकिन अब सास नहीं बहू हो गयी, क्योंकि उसका पति कमाता है और पूरे परिवार का भरण-पोषण करता है, जिसके कारण ज्वालाप्रसाद के परिवार में छोटी-छोटी बातों में अधिकार और शक्ति के बदलते हुए चिन्ह देखने को मिलते हैं। मुंशी शिवलाल भी यह अनुभव करते हैं कि, अधिकार और शक्ति अपना स्थान बदलकर एक जगह से दूसरी जगह जा रहा है। जैसे छिनकी के उत्तर से टूटती हुई सम्मिलित परिवार व्यवस्था का रूप हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है।

छिनकी तमक उठी - "घर की मालकिन ज्वाला की बहू आय। ई जो सब राजपाट आय तौन ज्वाला की बदौलत सब लोग भोग रहे आय।"[3]

राधेलाल का समस्त परिवार अपने स्वार्थों के लिए ज्वालाप्रसाद के पद और मर्यादा से खेलकर अपने को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाना चाहता है। इसप्रकार हम देखते हैं कि संयुक्त-परिवार के लोग ज्वालाप्रसाद की अर्जित सम्पति का उपयोग मात्र ही नहीं करते अपितु समाज में उसके नाम एवं प्रतिष्ठा का दुरुपयोग करने में भी नहीं हिचकते। राधेलाल और शामलाल मिलकर ज्वालाप्रसाद के नाम पर अपनी बहू के लिए जेवर बनवा लेते हैं। बढ़ता हुआ पारिवारिक कलह एवं नई-पुरानी मान्यताओं की होड़ मुंशी शिवलाल की मृत्यु का कारण बनती है। मुंशी शिवलाल के मृत्यु के साथ ही विचलित व्यवस्था का भी अंत होता है, क्योंकि वह संगठन-सूत्र टूट जाता है, जो सभी को अब तक एक में बाँधे हुए था। पिता की कुर्बानी के बाद भी जब पारिवारिक कलह शान्त होने के स्थान पर अधिक बढ़ जाता है तो खीझकर ज्वालाप्रसाद को वहीं कदम उठाना पड़ता है जिसकी ओर छिनकी ने बहुत पहले संकेत किया था।

संयुक्त परिवार व्यवस्था के विघटन के साथ ही दूसरे खंड की कथा समाप्त होती है।

इसप्रकार "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के द्वितीय खण्ड में संयुक्त

परिवार व्यवस्था की टूटती हुई दिशा का और नये परिवर्तनों का चित्रण मिलता है। मुंशी शिवलाल जो संयुक्त परिवार-व्यवस्था का प्रमुख व्यक्ति था, जिसका संगठन सूत्र सभी परिवार को अब तक एक में बाँधे हुए था। परंतु युगानुकूल परिवर्तन ने संयुक्त-परिवार व्यवस्था को तोड़ दिया जिससे परिवार का सबसे बड़ा व्यक्ति स्वामी न रहकर स्वामीत्व उसके पास आ गया जिसके पैसों के आश्रय से परिवार पलने लगा। इसप्रकार अनेक परिवारों का विघटन होने लगा और साथ ही साथ नये परिवर्तनों का समाज अंकित होने लगा। इसका ही सही चित्रण इस खंड में अंकित हुआ है।

तीसरा खण्ड -

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के तीसरे खंड के कथानक का प्रारम्भ दिल्ली-दरबार की प्रतिक्रिया से होता है। दिल्ली-दरबार के प्रबन्ध में सम्मिलित होने के लिए जाते हुए गंगाप्रसाद का परिचय कुंवर रिपुदमन के अतिरिक्त राधाकिशन तथा इनकी पत्नी संतों से होता है। यहीं से कथानक ऊपर उठकर उच्चवर्ग के राजा-महाराजाओं, बड़े सरकारी अफसरों और लखपति व्यापारियों के परिवेश को संस्पर्श करने लगता है। इस प्रसंग में गंगाप्रसाद की विलासी मनोवृत्ति के साथ-साथ राजाओं और धनी व्यापारियों के घृणित विलासी जीवन की झाँकी भी देखने को मिलती है। राधाकिशन का अपनी भाभी से अनैतिक सम्बन्ध, सन्तों का गंगाप्रसाद के प्रति समर्पण, रिपुदमनसिंह के निराश जीवन के गोपनीय रहस्यों का उद्घाटन, राजा सत्यजित प्रसन्नसिंह एवं मेजर वादस के प्रति संतो का समर्पण आदि तत्कालीन विलासी जीवन के बहुरंगी दृश्य हैं।

उपन्यास के तीसरे खंड से राजनीतिक चेतना करवट बदलती है। दिल्ली-दरबार की प्रतिक्रिया मध्यवर्गीय सरकारी अफसरों पर दो रूपों में दिखाई पड़ती है - एक अंग्रेजी शासन का विरोधी वर्ग है जो अंग्रेजों के प्रत्येक कार्य को संशय, अविश्वास और तिरस्कार की दृष्टि से देखता था और दूसरा

पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति में पला प्रगतिशील वर्ग था जो अँग्रेजों को भारत के क्रमिक विकास का प्रतीक मानते हुए उनके प्रत्येक कार्य में औचित्य पाता था। प्रथम वर्ग के प्रतिनिधि प्राचीन भारतीय परम्परानुगामी हिन्दु-मुस्लिम थे और दूसरे में अभिनव सभ्यता-संस्कृति के समर्थक, सरकारी नौकर, देशी रियासतों के सामन्त, ताल्लुकेदार तथा जमींदार थे। हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक भावना से ग्रस्त थे, जिसे लेखक ने मध्यवर्गीय शिक्षित सरकारी अफसरों के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है। हिन्दुओं की प्रतिक्रिया जितनी अँग्रेजों के खिलाफ थी, उससे कहीं अधिक मुसलमानों के प्रति घृणा थी। पंडित सोमेश्वर दत्त जो स्वयं डिप्टी कलेक्टर है, एक ओर दिल्ली दरबार की आलोचना करते हुए कहते हैं, -

"अब हम पूर्ण रूप से गुलाम हो गये। इंग्लैंड का बादशाह दिल्ली में अपना दरबार करने आ रहे हैं, हिन्दुस्तान के राजे-महाराजे उसके सामने अपना सिर झुकाएँगे, उसको नजरें देंगे, उसका आधिपत्य स्वीकार करेंगे।" [4]

मुस्लिमवर्ग, जितने अँग्रेजों से रूष्ट थे, उससे कहीं अधिक हिन्दुओं का विरोध कर रहे थे। मध्यवर्गीय प्रगतिशील वर्ग महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में आस्था और विश्वास रखते हुए स्वतंत्रता-संग्राम को बल प्रदान कर रहा था। ज्ञानप्रकाश, सत्यवती, मायाशर्मा, विद्या, नवलकिशोर आदि ऐसे ही पात्र हैं, जिनके माध्यम से उपन्यासकारने तत्कालीन राजनीतिक चेतना का सटीक चित्र प्रस्तुत किया है।

गंगाप्रसाद पाश्चात्य सभ्यता - संस्कृति में पला हुआ एक ऐसा सरकारी अफसर हैं, जो अपने वर्ग का अपवाद है। वह मन से स्वतंत्रता-आंदोलन के साथ ही नहीं, अपितु गांधीजी की नीति में अनन्य आस्था रखता है। अँग्रेज पूँजीपती हैरीसन द्वारा गांधी का अपमान किए जाने पर वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है और जिसका मूल्य उसे जीवन-पर्यन्त चुकाना पड़ता है। गंगाप्रसाद हैरीसन से कहता है, -

"मिस्टर हैरीसन, यह तुम्हारा कमीनापन और लुच्चापन है जो तुम उस महापुरुष को गालियाँ दे रहे हो। हम उसकी राजनीति से भले ही सहमत न हों, लेकिन उसकी महत्ता, ईमानदारी और शराफत से इन्कार नहीं कर सकते।" [5]

गंगाप्रसाद का चरित्र दुरंगा है - एक तो सरकारी अफसर तथा दूसरा तटस्थ देशभक्त का है। सरकारी अफसर के रूप में वह कठोर शासक है, जो देश के हर विरोध को दमन-नीति से दबा देने के पक्ष में है। वह चाहता है कि, "डोमिनियन स्टेट्स" मिल जाएँ तो इस सरकारी अफसरों के हित में अच्छा होगा। ज्ञानप्रकाश से वह कहता है, -

"हाँ चचा, बात तो ठीक कहते हो। मुझको ही लो, ऐसा दिखता है कि डिप्टी कलेक्टरी में ही जिन्दगी बीत जाएगी। बहुत हुआ तो शायद ज्वाईण्ट मॅजिस्ट्रेट बना दिया जाऊँ, जबकि अंग्रेज लौंडा आते ही मेरा अफसर बनकर बैठ जाता है और मुझ पर धौंस जमाने लगता है। तो, चचा, अगर "डोमिनियन स्टेट्स" मिल जाये तो मैं कम-से-कम आगे बढ़ने के सपने देख सकूँगा।" [6]

लेकिन उसका सपना टूट जाता है, जब कानपूर के अंग्रेज व्यापारी हैरिसन से उसकी टक्कर हो जाती हैं।

गंगाप्रसाद गाँधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित तो अवश्य है परन्तु वह हिन्दु-मुस्लिम नीति का विरोधी है, जिसके कारण वह साम्प्रदायिक वातावरण को देखकर अपना लिखा हुआ इस्तीफा फाड़कर फेंक देता है। गंगाप्रसाद उन अधिकांश अफसरों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्होंने स्वतंत्रता-आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ताओं को सदैव संरक्षण दिया।

दिल्ली दरबार के प्रबन्ध में जाने पर गंगाप्रसाद ने भारतीयों की निस्सहाय स्थिति देखी और, अनुभव की।

"रास्ता चलते हुए अंग्रेज सिपाही और उनके अफसर, इन लोगों के

लिए इन मजदूरों का अस्तित्व जानवरों के झुंड के अस्तित्व के समान था, जिसकी ओर ध्यान देने की उन्हें कोई आवश्यकता न थी। कुछ थोड़े से संभ्रान्त हिन्दुस्तानी अफसर और ठेकेदार भी इधर-उधर दीख जाते थे - कुछ अजीब तरह से सहमे हुए।" [७]

इसप्रकार की भेदभावपूर्ण नीति से अंग्रेजों के प्रति भारतीयों में विद्रोह का जन्म हुआ, जिसका सर्वांगीण रूप अमृतसर के कॉन्ग्रेस अधिवेशन के बाद देखने को मिलता है।

इसप्रकार "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के तीसरे खंड में राजनैतिक चेतना का सफल निर्वाह हुआ है। इस खण्ड में स्वाधीनता पूर्व राजनीतिक स्थिति के बदलाव का समाजनिहित सही चित्रण मिलता है। इस खण्ड में दिल्ली दरबार की प्रतिक्रिया स्वरूप मध्यवर्गीय सरकारी अफसरों के दो वर्गों का चित्रण किया है। इस वर्ग के समाज पर नेहरू तथा गांधीजी के विचारों का प्रभाव था।

चौथा खंड -

भगवतीचरण वर्मा कृत "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास का चौथा खंड पाश्चात्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर अत्यन्त निराश और अंग्रेजों के प्रति आक्रोश-भावना लेकर वापस लौटे हुए नवयुवक ज्ञानप्रकाश की नवजागृत राष्ट्रीय भावना और गांधीवादी आस्था की अभिव्यक्ति करता है। इंग्लैंड के प्रवास-काल में उसे जो भी अनुभव प्राप्त हुए, उसी से अंग्रेजी शासन के प्रति उसके अन्तर्मन में कटुता भर आयी। ज्ञानप्रकाश देश के स्वतंत्रता-आंदोलन में सक्रिय भाग लेने की कामना से भारत वापस आकर अमृतसर कांग्रेस में भाग लेने के लिए तैयार है, क्योंकि वह देश में आ रही नई चेतना का दर्शन करना चाहता है। वह गंगाप्रसाद को भी राजनीतिक हलचल में अपने साथ घसीटना चाहता है, जो अपने अधिकार के नशे में और विदेशों में भारतीयों की अपमानजनक स्थिति से अपरिचित हैं। गंगाप्रसाद द्वारा कांग्रेस छोड़ देने का आग्रह करने पर वह ब्रिटिश नौकरशाही पर व्यंग्य करते हुए कहता है, -

"बिलकुल यही बात तुमसे सुनने की आशा थी बरखुरदार। डिप्टी कलेक्टर हो न। मौज करते हो, चैन की जिन्दगी है लेकिन मुझसे पूछो, मैं जो युरोप से लौट रहा हूँ। हम लोग गुलाम हैं, हम लोग असभ्य हैं, हम लोग अछुत हैं। तुमने यह अनुभव नहीं किया, क्योंकि तुम्हें हिन्दुस्तान से बाहर निकलकर यह सब अनुभव करने का मौका ही नहीं मिला।" [८]

ज्ञानप्रकाश की यह प्रतिक्रिया अकेले ज्ञानप्रकाशकी न होकर कांग्रेस के अधिकांश नेताओं की थी। युरोप के प्रवास काल में उन लोगों ने जिस हीनता का अनुभव किया उसकी व्यापक प्रतिक्रिया स्वतन्त्रता आन्दोलन की ओर उन्हें प्रेरित करती रही।

ज्ञानप्रकाश, गंगाप्रसाद तथा मिस्टर ग्रिफिथ्स के वार्तालाप व्दारा अंग्रेजी सरकार की नीति एवम् स्वदेशी आन्दोलन का परिचय मिलता है। ब्रिटिश सरकार को भारतीय बुध्दिजीवी, मध्यम-वर्ग एवं जमींदारों से सहयोग मिलता रहा, क्योंकि सरकारी स्वार्थों के साथ इनके स्वार्थ बंध गये थे। अतः स्वदेशी आन्दोलन पनप नहीं रहा था।

कांग्रेस ने अपने चारों वार्षिक अधिवेशनों में सरकार के प्रति वफादारी और युध्द-प्रयास में सहायता के प्रस्ताव पास किये। अहिंसा के देवता गाँधी सन १९१८ ई. तक सैनिक भर्ती कार्यक्रम में सक्रिय योग देते रहे तथा गुजरात के किसानों को सेना में भर्ती होकर स्वराज्य प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। परंतु इन सबका पुरस्कार अंग्रेज सरकारने दमन-नीति व्दारा दिया। रजनी पामदत्त व्दारा, - "कांग्रेस ने विरोध करना चाहा तो उसने उसके अपने विकराल दमनकारी रूप का प्रदर्शन करते हुए जालियाँवाला बाग में ऐसा भयंकर हत्याकांड उपस्थित किया, जिसे देखकर इतिहास रो पड़ा, मानवता काँप उठी और देश सहम गया।" [९]

तब कहीं जाकर इन नेताओं की आँखे खुलीं और वे आन्दोलन की बातें सोचने लगे। गाँधीजी के आंदोलन प्रारम्भ करने के साथ ही साथ देश के

कोने-कोने में हड़तालें हुई, जुलूस निकाले गये और पुलिस जनता में अनेक टक्करें हुई। इस आन्दोलन में हिन्दु-मुस्लिम एकता का जो दृश्य दिखाई पड़ा, वह युगों तक दुर्लभ हो गया। ज्ञानप्रकाश कहता है -

"असहयोग एक तरह से आरम्भ हो गया है। इस असहयोग को खिलाफत आन्दोलन में बहुत बड़ा बल प्राप्त हुआ है। देश के मुसलमानों में इस समय अंग्रेजों के विरुद्द प्रबल भावना जाग उठी है। देश में खिलाफत परिषद हुई की उसमें देश के मुसलमानों ने असहयोग आन्दोलन के सिध्दान्तों को स्वीकार कर लिया है। ये मुसलमान मूलत: भारतवर्ष के निवासी हैं, यह भी मुसलमानों ने अनुभव कर लिया है।"[१०]

हिन्दु-मुस्लिम एकता ने ऐसे राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्रपात किया। ब्रिटिश सरकारने भावी परिस्थितियों का अनुमान लगा लिया कि राष्ट्रीय आन्दोलन कुछ व्यक्तियों के विरोध का प्रदर्शन नहीं, अपितु सम्पूर्ण जनता का आन्दोलन बनता जा रहा है। "खिलाफत" के प्रश्न ने भारत के मुसलमानों में अंग्रेजों के विरुध्द असंतोष की लहर फैला दी, जिससे राजनीतिक जगत् में हलचल मच गई। गांधीजी की योजनानुसार आन्दोलन आरंभ हुआ। जनता ने पूरे उत्साह के साथ इस कार्यक्रम को अपनाया। गांधीजी ने भारतीय जनता को विश्वास दिलाते हुए कहा, -

"यदि ३१ दिसम्बर, सन् १९२१ई.तक स्वराज्य नहीं मिला तो हम जीवित नहीं रहेंगे। इससे जनता का विश्वास और उत्साह और अधिक बढ़ गया। साथ ही पुलिस का दमन भी बढा।"[११]

आन्दोलन जोरों से चल रहा था, खादी और स्वदेशी का प्रचार हो रहा था, विदेशी माल का बहिष्कार किया जा रहा था। जुलूस निकलते थे और खुल्लमखुल्ला सरकार की निन्दा की जाती थी, अंग्रेजों को गालियाँ दी जाती थी। जौनपुर में इस आन्दोलन को दबाने की जिम्मेदारी कलक्टर ने

गंगाप्रसाद को दे दी थी। वह तत्परतासे निर्दयतापूर्वक अपनी जिम्मेदारी को निबाह रहा था। यह आंदोलन का पहला दौर था जबकि सरकारी जेलें भरी हुई थीं। सरकार जितना ही आंदोलन को दबाने का प्रयत्न कर रही थी उतना ही आन्दोलन बढ़ता जा रहा था।

कलकत्ता कांग्रेस के अधिवेशन में गाँधीजी ने खिलाफत लीग को कांग्रेस में सम्मिलित कर लिया था। इससे कांग्रेस की विघटित शक्ति का पुनर्गठन हुआ, जिससे आन्दोलन को आगे बढ़ने में एक महाशक्ति प्राप्त हुई। सरकार के पास कोई अस्त्र न था, जिसकी सहायता से आंदोलन को नियंत्रित कर पाती सिवाय दमन के। देशी पूँजीपति लाखों रूपया कांग्रेस पार्टी को दे रहे थे, स्वदेशी आंदोलन से देशी मिलों के भाग्य चमक उठे और मिल-मालिक तथा व्यापारी सीधे लाभ उठाने लगे।

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास का लक्ष्मीचन्द्र ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो स्वराज्य और खिलाफत में देश-प्रेम से अभिरूचि नहीं लेता था जितना अपने स्वार्थ सिध्दी में लेता था। वह गंगाप्रसाद से कहता है -

"अगर देश का भावनात्मक सहयोग हम लोगों को प्राप्त हो जाए तो हम उद्योगपति देश को धीरे-धीरे आत्मनिर्भर बना सकते हैं। लोग मोटे कपड़े पहनें, लेकिन स्वदेशी ही खरीदें तो धीरे-धीरे और अधिक मिलें खुलने लगेंगी देश में, और हम अच्छे महीन कपड़े भी बनाने लगेंगे। तो, गंगा असहयोग का यह स्वदेशी आन्दोलन तो हमारे हक में पड़ता है। बाकी रहा स्वराज्य और खिलाफत, वह सब ढकोसला है।" [१२]

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में भगवतीचरण वर्मा ने कानपुर की अदालत का चित्र खिंचा है, जिसमें अपराधियों ने न्याय और न्यायाधीश दोनों की भी अवहेलना की है। गंगाप्रसाद ज्वाइंट मॅजिस्ट्रेट ने जब सफाई सुननी चाही तो जगमोहन नामक कैदी ने कहा, -

"मैं इस विदेशी शासन की अदालत को नहीं मानता। यह

ब्रिटीश सरकार जुल्मपरजुल्म करती जाती है। जालियाँवाला बाग का हत्याकांड इसने किया, इसने बम्बई की निहत्थी जनता की भीड़ पर गोलियाँ चलाईं।"[13]

तत्युगीन आन्दोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, इसमें नारियों ने भी प्रथम बार अपना सहयोग दिया। प्रत्येक नवीन आन्दोलन देश में नई उत्तेजना और उत्साह का संचार कर रहा था। प्रथम महायुध्द के बाद काँग्रेस के नेतृत्व में जिस आंदोलन का सूत्रपात हुआ था, वह एक प्रकार से काँग्रेस का नहीं अपितु जनता का ही निर्णय था।

अमृतसर के काँग्रेस अधिवेशन से लेकर सामूहिक सत्याग्रह वापसी तक का साँगोपाँग चित्र वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के चौथे खंड में अंकित किया है।

इस उपन्यास के चतुर्थ खंड में पाश्चात्य उच्चशिक्षा प्राप्त कर लौटे हुए नवयुवकों में ज्ञानप्रकाश की निराशा और अंग्रेजों के प्रति आक्रोश-भावना का चित्र खिंचा है। इस खंड में राष्ट्रीय भावना और गाँधीवादी आस्था की अभिव्यक्ति मिलती हैं। गंगाप्रसाद तथा ज्ञानप्रकाश स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय सहयोग देते हैं। वर्माजीने इस खण्ड में अमृतसर के काँग्रेस अधिवेशन से लेकर सामूहिक सत्याग्रह वापसी तक का साँगोपाँग चित्र अंकित किया है। वर्माजीने कानपुर की अदालत का भी चित्र खींचा है।

इस प्रकार अमृतसर के काँग्रेस अधिवेशन से लेकर सामूहिक वापसी तक का विस्तृत चित्र चौथे खण्ड में वर्माजीने चित्रित किया है।

पाँचवा खंड -

भगवतीचरण वर्माजी कृत "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के पाँचवे खंड में अपने युग की राजनीतिक चेतना से याने गाँधीवाद से सबसे अधिक प्रभावित ज्वालाप्रसाद की तीसरी पीढ़ी का युवक नवल किशोर है। वह अपने बाबा

ज्ञानप्रकाश से प्रभावित होकर गाँधीजी के सिद्धान्तों को अपनाकर काँग्रेसी सदस्य बन जाता है।

भारतीय जन शक्ति एक ओर ब्रिटीश साम्राज्यवाद की दासता से मुक्ति पाने के लिए संघर्षरत थी वहीं दूसरी ओर काँग्रेस का लक्ष्य अब औपनिवेशिक स्वतंत्रता पर नहीं रह गया, अपितु पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना ही निर्धारित किया गया। काँग्रेस ने रचनात्मक कार्यक्रमों के संचालन के लिए एक करोड़ रुपया एकत्रित किया तथा बीस हजार घरों में चरखा चलाने की योजना क्रियान्वित हुई। शस्त्रास्त्र के बल पर स्वतंत्रता-आकांक्षी वीरों के साहसपूर्ण कृत्यों द्वारा देश के जन-जीवन में स्फूर्ति आई। दिल्ली वापस आ रहे वायसराय की स्पेशल ट्रेन पर पुराने किले के पास का बम कांड ऐसी ही घटना है। दमनचक्र तो इतने जोरों पर चल रहा था कि लोग बिना किसी आंदोलन के बात-बात में जेलों में बंद किये जाते थे। देश की चेतना मध्यवर्ग की बेकारी से जाग उठी। इसीकारण क्रान्तिकारी आंदोलन बेकारी का अभिशाप बनकर आया। अंग्रेजों ने बहुत दिनों तक इसे हिन्दू-मुस्लिमों के प्रश्न को उठाकर बखेड़े में फंसाये रखा। परंतु झूठे उपचार से सत्य-समस्याएँ हल न हो सकीं, हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव दब गया, क्योंकि बेकारी और असन्तोष हिंदू और मुस्लिम में समान भाव से था। दिसम्बर सन् १९२८ में कलकत्ता काँग्रेस अधिवेशन में यह निश्चय किया गया कि इस बार आन्दोलन का आरंभ सीधे लगानबंदी से किया जाएगा। क्योंकि आंदोलन कहीं व्यापक जन-क्रांति का रूप धारण न कर ले।

प्रोफेसर शंकर के माध्यम से वर्माजी ने गाँधी और पं. जवाहरलाल नेहरु के व्यक्तित्व का आकलन युगीन सन्दर्भ में किया है।

"गाँधी, अपने समस्त अनुभवों और अपने दर्शन के साथ एक स्थापित और प्रभावशाली व्यक्तित्व है, जबकि जवाहरलाल अनुभवहीन है, अविकसित है। लेकिन जवाहरलाल देश की नवीन चेतना का नेता है। जो त्याग और बलिदान गाँधी का दर्शन चाहता है, वह त्याग और बलिदान जवाहरलाल में अपनी

-चरमसीमा में है। यही नहीं, जवाहरलाल में कार्यशीलता है, उदारता है और संतुलन है, शायद गाँधी से अधिक। गाँधी सफल इसलिए हैं कि जवाहरलाल उनके साथ हैं।" [१४]

लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल ने पूर्ण स्वतंत्रता काँग्रेस का ध्येय घोषित कर नेतृत्व गाँधीजी के हाथों में सौंप दिया।

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के उत्तरार्ध में एक अभिनव चेतना के दर्शन गाँधीजी के नमक कानून तोड़ने के साथ होता है। नवलकिशोर, एक ऐसा नवयुवक है जो ऊँचे सरकारी अफसर का पुत्र है तथा जिसने आई. सी. एस. बनने के सपने मन में संजो रखे हैं। परन्तु काँग्रेसी देशव्यापी लहर में वह ज्ञानप्रकाश से प्रभावित होकर केवल काँग्रेस का स्वयंसेवक ही नहीं बनता, अपितु गाँधीजी का नमक सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ होते ही इलाहाबाद में नवल और ज्ञानप्रकाश पहले ही दिन नमक कानून भंग करते हैं और जेल में जाते हैं।

नवल के अन्तर्मन का चित्रण करते हुए लेखक कहता है, - "

"नवल ने अपने अन्दर एक नयी उमंग को धीरे-धीरे जन्म लेते हुए अनुभव किया। जिस समय वह मंच पर पहुँचा उसके अन्दर एक तरह की घबराहट थी। वह घबराहट दूर हो गई, अब एक नयी दृढ़ता उसके अन्दर आ गई और थोड़ी देर बाद नवल को लगा कि वह एकाएक बदल गया, एक असीम उल्लास, एक अडिग संकल्पना।" [१५]

नवल अहिंसा की लड़ाई में सम्मिलित होकर अपने अन्दर नवीन उत्साह का अनुभव करता है। ज्वालाप्रसाद और भीखू नवल के रूप में अहिंसावादी नई चेतना के नये रूप का स्वागत करते हैं। नवल को जुलूस में अगुआ बने आगे बढ़ते देखकर भीखू युगीन अभिनव मान्यताओं को समझने का प्रयास करते हुए कहता है,-

"ई नवल बिटवा अपनी खुशी से जेल जाय रहा है। ई विद्या बिटिया नौकरी करै लागी हैं। समझ मैं नहीं आवत हैं भइया, ई सब का हुइ रहा है।" [16]

ज्वालाप्रसाद जिन्होंने अपना युग देखा है और नये युग को समझा है, वह भी आश्चर्यचकित से भीखू से कहते हैं,-

"हाँ, भीखू, कुछ समझ में नहीं आ रहा। आज पचास साल में क्या से क्या हो गया। सब कुछ बदल गया, एकदम बदल गया। युग बदल गए भीखू, मैं बदल गया। न जाने कितने नये लोग आये, न जाने कितने पुराने लोग* चले गये।" [17]

ज्वालाप्रसाद का यह कथन युगीन, गतिशील चेतना का तटस्थ रूप उद्घाटित करता हैं,क्योंकि उनमें नवीन चेतना के प्रति ना तो आक्रोश है, न पुरानी मान्यताओं के प्रति आसक्ति हैं।

भगवतीचरण वर्मा अभिनव और पुरातन पीढ़ी के विचार और युग के अन्तराल को निर्देशित करते हुए कहते हैं,

"दो बूढ़े, जिन्होंने युग देखा था, जिन्दगी के अनेक उतार-चढ़ाव देखे थे जिन्होंने, जिनके पास अनुभवों का भंडार था, विवश थे, निरुत्तर थे। और दूर हजारों, लाखों, करोडों, आदमी जीवन और गति से प्रेरित, नवीन उमंग और उल्लास लिए हुए एक नवीन दुनिया की रचना करने के लिये चले जा रहे थे।" [18]

नवल आदर्शवाद के उषःकाल का प्रतिक हैं, वह उषःकाल जो महात्मा गाँधी के चमत्कारपूर्ण संस्पर्श से आविर्भूत एक ऐसी घटना है जो परवर्ती इतिहास के परिप्रेक्ष्य में भले ही असंगत लगे, परंतु है सत्यमंडित। कितना अल्पकालिक था वह उषाकाल ।। लेखक हमें प्रभात की देहरी पर लाकर छोड़ देता हैं।

वस्तुतः "भूले-बिसरे चित्र" बृहत उपन्यास में बीती हुई अर्द्ध-शती चित्रित करता है, जिसमें साम्यवादी चेतना के विकास और राष्ट्रीय

आन्दोलनों में उनके योगदान का वर्णन है और साथ ही यह भी दिखाया गया है कि किस प्रकार सरकारी अफसरों के परिवारों में राष्ट्रीय-चेतना प्रभाव डाल रही थी। नवलकिशोर इस-चेतना के पुंजीभूत आलोक से-चमत्कृत होकरे ही कांग्रेस में सम्मिलित होता है। इसप्रकार वर्माजीने एक ही परिवार की चार पीढ़ियों के माध्यम से १८८५ से १९३० ई. तक की राजनीतिक समस्याओं, संघर्षों, परिवर्तनों तथा राष्ट्रीय चेतना के उद्‌भव विकास को संपूर्ण सजीवता: के साथ प्रस्तुत किया है।

इसप्रकार भगवतीचरण वर्मा ने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के पाँचवे खंड में ज्वालाप्रसाद की चौथी पीढ़ी का युवक नवल किशोर को गाँधीवादी विचारों से प्रभावित दिखाया है। इस खण्ड में राजनैतिक चेतना के साथ-साथ गाँधीवादी विचारों से प्रभावित समाज का चित्रण मिलता है। नवल किशोर गाँधीवादी विचारों से प्रभावित होकर कांग्रेस का सदस्य बन जाता है। वह अहिंसा की लड़ाई में सम्मिलित होता है। नवल किशोर को आदर्शवाद के उष:काल का प्रतिक दिखाया है। इस प्रकार इस उपन्यास के पाँचवे खण्ड में परिवर्तनशील समाज का परिवर्तित रूप प्रतिबिंबित है। ज्वालाप्रसाद युग परिवर्तन के साथ समाज परिवर्तन को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि, भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास साहित्य युगदर्पण है, जिसमें विविध सामाजिक समस्यायें विभिन्न रंगों में दीख पड़ती है। भगवतीचरण वर्माजी के "भूले-बिसरे चित्र" बृहत उपन्यास में भारतीय सामाजिक जीवन का बहुमुखी चित्रण मिलता है। इस उपन्यास में संवत १८८५ ई. से लेकर १९३० ई. तक के भारतीय सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब मिलता है। इस उपन्यास को पाँच खण्डों में विभाजीत करके भारतीय समाज का चित्रण किया है। एक ही पीढ़ी के व्दारा युगानुरूप बदलते हुए मूल्यों का चित्रण मिलता है।

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खंड में विविध सामाजिक जीवन में घटीत घटनाओं का, प्रथाओं का सही चित्रण देखने को मिलता है। संयुक्त परिवार की व्यवस्था, जाति-पाँति की समस्या, ऊँच-नीच भेदभाव, छुआछूत की समस्या, जमींदारी प्रथा तथा अवैध प्रेम की समस्या, विधवाओं की अनेक समस्याएँ आदि का चित्रण किया है और उसमें ही तत्कालिन समाज का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। उपन्यास के व्दितीय खंड में संयुक्त परिवार व्यवस्था की टूटती हुई दशा का समग्र चित्रण हुआ है। इसमें टूटते हुए संयुक्त परिवारों के साथ बदलते हुए नए-नए परिवर्तनों का चित्रण मिलता है। तीसरे खण्ड में राजनैतिक चेतना से प्रभावित समाज का सफल चित्रण मिलता है। वर्माजीने राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप बदलते हुए दो वर्गों के समाज निहित चित्रों का चित्रण किया है। इस उपन्यास के चतुर्थ खंड में राष्ट्रीय भावना तथा गाँधीवादी विचारों से युक्त समाज का चित्रण वर्माजीने किया है। ज्ञानप्रकाश गाँधीवादी विचारों से प्रभावित एक क्राँतिकारी युवक है। इस खण्ड में गांधीजी व्दारा चलाए गए सत्याग्रह का विवेचन प्रस्तुत किया है। पाँचवे खण्ड में भगवतीचरण वर्माने नवल किशोर को राजनैतिक चेतना के साथ-साथ गाँधीवादी विचारों से प्रभावित दिखाया है। वह इस उपन्यास की चौथी पीढ़ी में अहिंसावादी तथा नये उष:काल का प्रतिक बन जाता है। इस खण्ड में वर्माजीने संवत १९३० तक के युग के परिवर्तनशील समाज का चित्र प्रतिबिंबित किया है।

अत: हमें लगता है कि, भगवतीबाबू ने चार पीढ़ीयों का चित्रण बदलते हुए रूपों में किया है। एक ही पीढ़ी के सदस्यों में युगानुरूप कैसा परिवर्तन होता है, यह दिखाया है। वस्तुत: "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में बीती हुई अर्धशती के "भूले-बिसरे चित्रों" को वर्माजीने पुन: यादों के सहारे चित्रित किया है। वर्माजीने इस उपन्यास के व्दारा संवत १८८५ ई. से लेकर संवत १९३० ई.तक का समाज कुशलतापूर्वक प्रतिबिंबित किया है।

::: संदर्भ - ग्रंथ सूची :::

१. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. १०१

२. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-तबिसरे चित्र" पृष्ठ सं. १४४

३. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ११२

४. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. १९५

५. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ४२१

६. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ३१७

७. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. २१७

८. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ३१६

९. रजनी पामदत्त, इंडिया टूडे पृष्ठ सं. २७०

१०. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ३४७

११. रजनी पामदत्त, इंडिया टूडे पृष्ठ सं. २८६

१२. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. २८७

१३. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ३९२

१४. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ४०६

१५. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ५५७

१६. भगवतीचरण वर्मा, ६भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ५५९

१७. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ५५९-६०

१८. भगवतीचरण वर्मा, "भूले-बिसरे चित्र" पृष्ठ सं. ५६०

१९.- डॉ. बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना पृष्ठ सं. १७८